137/300

25

2 D] म.प्र में सामान्य उत्पादन तथा सिंचाई तथा शक्ति के - को लक्ष्यों के लिए नर्मदा घाटी परियोजना को अक्टूबर 1986 में की गई। इस परियोजना के अंतर्गत 29 बड़ी 135 मध्यम एवं 3000 छोटी सिंचाई परियोजना के निर्माण का लक्ष्य रखा गया। इन्दिरा सागर परियोजना इसी का अंग है। ओंकारेश्वर परियोजना खण्डवा में नर्मदा नदी पर निर्मित 92 मीटर ऊंची बांध परियोजना है।

प्रभाव सीमा का उल्लेख

22

2 E] म.प्र एक कृषि प्रधान राज्य है। यहां की जलवायु को 11 कृषि प्रदेशों एवं 5 फसल क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। ज्वार बाजरा, एवं धान का उत्पादन मालवा, बुन्देलखण्ड, एवं बघेलखण्ड के साथ-साथ बालाघाट, छिंदवाड़ा आदि क्षेत्रों में किया जाता है। ज्वार बाजरा का उत्पादन म.प्र में अग्रणी स्थान है।

3

Scanned with CamScanner

2.3] रीवा पन्ना का पठार — भारत की उच्चतम रेखा को
हो जाओं की चट्टानों से बने हुए, जैसे विन्ध्य
है तथा यहाँ पठार से विशाल [illegible] का क्षेत्र
निर्मित होता है और भारत के अन्य भागों से [illegible]
सामान्य है।

अक्षांशीय एवं देशान्तरीय स्थिति — 23° 21' से
[illegible] 79°, 20' उत्तरी अक्षांश तथा 74° 41' से
82° 18' पूर्वी देशान्तर है।

निर्माण — प्राचीन [illegible] एवं विन्ध्य शैल से बना

औसत ऊँचाई — लगभग 650 - 750 मीटर

प्रमुख नदियाँ — सिंध, चम्बल, [illegible], सोन।

(4)

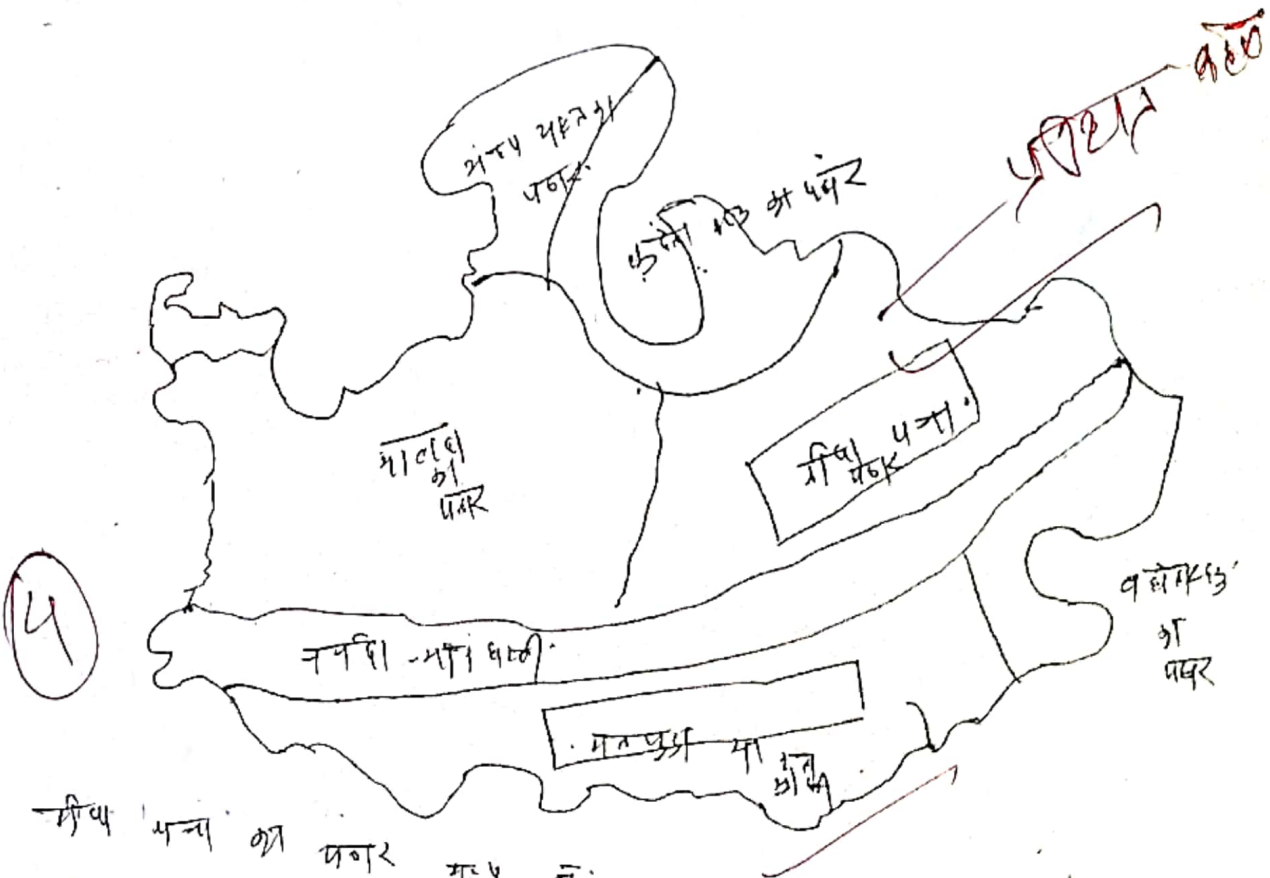

रीवा पन्ना का पठार मध्य में आर्थिक एवं प्राकृतिक दृष्टि से [illegible] है।

[illegible]

[illegible] 23°51' [illegible] 24°27' [illegible] 75°15' [illegible] 77°18' [illegible] पूर्वी [illegible]

[illegible]

[illegible] है [illegible] 80 से 120 से.मी. है, [illegible]

प्रमुख जिले - कोटा, बारां, झालावाड़, बूंदी।

प्रवाहित नदियां - चम्बल, पार्वती, काली सिंध।

निर्माण कार्य में नदियों का प्रवाह एवं [illegible]

में [illegible] एवं [illegible] प्रकृति का [illegible]

(4)

3] भारत के भौगोलिक मानचित्र में मध्य भा-रतीय प्रमुख भौगोलिक भागों में पहचान किया गया है। वस्तुतः नर्मदा नदी घाटी मध्य प्रदेश का क्षेत्र है। जिसकी स्थिति 22°30' से 21°20' उत्तरी अक्षांश एवं देशांतर 74°40' से 82°18' पूर्वी देशांतर तक विस्तृत है।

नर्मदा नदी घाटी एक प्राचीन घाटी है जो गंगा तथा प्रायद्वीपीय भारत के नदियों के मध्य जल विभाजक का कार्य करता है।

यह एक रिफ्ट घाटी है जो उत्तर पूर्व से लेकर पश्चिम तक म.प्र. की लम्बाई नापती चली जाती है। इसमें नर्मदा की घाटी (भारत की सबसे बड़ी रिफ्ट घाटी) अधिक लम्बी और चौड़ी है तथा मनुष्य की घाटी कहती है।

यह क्षेत्र म.प्र. का 27.12% है, जिसकी औसत ऊंचाई ~~[illegible]~~ भी है।

प्रमुख जिले - खंडवा, जबलपुर, नरसिंहपुर, आदि।

प्रवाहित नदियां - नर्मदा, तापी, तवा।

निष्कर्ष रूप में नदियों का प्रवाह एवं प्राचीन मानव के आखेट एवं सामाजिक प्रकृति का पता मिलता है।

(4)

Q 2

Scanned with CamScanner

(a)] कुछ [illegible] करते [illegible] या स्थितियाँ जाने [illegible] तापांश है।
प्रकार - 03 - 1. आर्थिक [illegible], 2. अल्पकालिक [illegible] 3. [illegible] [illegible] (2)
[illegible] कार्ड [illegible]

(h)] [illegible] स्थान [illegible] पारिस्थितिकी स्थान में स्थित है।
[illegible] यहाँ से [illegible] त्रिकूट - [illegible]
[illegible] है। (2)

(i)] - [illegible] [illegible] - CH_4, N_2O, CFC, [illegible] आदि। (1)
CFC HFC

(j)] - [illegible] - पर्वतीय [illegible] [illegible] जाति।
उदाहरण - [illegible], [illegible] है। (2)
[illegible] - [illegible] [illegible] प्रजाति [illegible]।
उदाहरण - [illegible]।

छात्रियाँ

(k)] - [illegible] का अर्थ - [illegible] की [illegible] [illegible] आर्थिक [illegible] - [illegible], आर्थिक तत्वों से [illegible] जीव [illegible] या [illegible] के [illegible] के लिए [illegible] है। (2)

(l)] [illegible] [illegible] एवं [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] वर्ष 2007 में [illegible] [illegible] [illegible] उद्देश्य को [illegible] योजना। (2)

ST/SC के लिए 1 लाख तक का [illegible]

(m)] सतपुड़ा [illegible] [illegible] नर्मदा तथा ताप्ती की [illegible] के [illegible] स्थित है। यह [illegible] [illegible] पर्वत है।
सर्वोच्च चोटी - 'धूपगढ़' है। (1)
1350
नदी [illegible]

भाग 13

Q. 1

1A] महासागरों में अपेक्षित गहरी होने वाली संकरी, पतली तथा गहरे गड्ढे होते हों, जिनका निर्माण विवर्तनिकी क्रिया अथवा प्लेटों के क्षेपण में होता हो। उदाहरण - मारियाना डेप्थ (प्रशांत महासागर)

2

1B] नीलगिरि, अन्नामलाई और पालनी पहाड़ी पर पाए जाने वाले शीतोष्ण कटिबंधीय वर्षा वनों को स्थानीय भाषा में शोला वन कहते हैं। शोला - तमिल शब्द 'कानाई' से बना है, जिसका अर्थ - ठंडा स्थान/जंगल। वृक्ष - मैग्नोलिया, लॉरेल

2

1C] ज्वालामुखी क्रिया के द्वारा निर्मित वृहद ढाल युक्त गुम्बदनुमा संरचना हो।
उदाहरण - अजों का टेगा पर्वत।

2

1D] दीप्ति प्रकाश आतपन = सूर्य से आने वाली किरण / पृथ्वी से परावर्तित किरण
सर्वाधिक बर्फ से

1

1E] हाइड्रोजन आधारित नाभिकीय संलयन एक निर्मित और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत।

1

H_2O अपघटन

1F] पूर्व का वेनिस - अलप्पुझा को कहा जाता है।

3

चित्तौड़ - चित्तौड़ में राजा भोज ने त्रिभुवन नारायण मन्दिर का निर्माण करवाया।

कवि का मूल्यांकन - राजा भोज अपने काल के साहित्य में उच्च कोटि के साहित्य सृजन कर 'कविराज' की उपाधि धारण करता था। जिसका कवियों को दरबार में आश्रय देता था तथा उसके बारे में कहा जाता है भोज जब तक जीवित रहा कवि उसके दरबार में आते रहे और कहते रहे - आज धारा नगरी को आधार प्राप्त है, सरस्वती को आश्रय मिला हुआ है, पण्डित मण्डित हैं (विद्वानों की कीर्ति) क्योंकि राजा भोज पृथ्वी पर विद्यमान है।

एक जनश्रुति प्रचलित है उसके दरबार में हर कवि को हर श्लोक में एक लाख स्वर्ण प्रदान किए जाते थे।

'अद्य धारा सदा धारा, सदालम्बा सरस्वती।
पण्डिता मण्डिताः सर्वे, भोज राजे भुवंगते॥'

लेकिन जब राजा भोज की मृत्यु हुई तब कहा जाता था -

आज धारा नगरी निराधार है, सरस्वती आश्रय विहीन हो गई है पण्डित (विद्या) खण्डित हो गये हैं क्योंकि भोज पृथ्वी पर नहीं रहे।

उपरोक्त विवरणों से स्पष्ट है राजा भोज (1010-1050 ई.) परमार वंश का एक प्रतापी शासक था।

आइने अकबरी के लेख के अनुसार उनके दरबार में लगभग 500 विद्वान रहते थे।
उनके दरबारी कवियों में भास्कर भट्ट, दामोदर मिश्र, धनपाल आदि प्रमुख रहते थे।
उनकी अनेक साहित्यिक रचनाएं - सरस्वती कंठाभरण, श्रृंगार प्रकाश, प्राकृत व्याकरण, तथा शब्दानुशासन प्रमुख हैं।

वास्तु शास्त्र पर आधारित पुस्तकें -

1. युक्ति कल्पतरु
2. समरांगण सूत्रधार।

शिक्षा संबंधी कार्य - उसने सरस्वती मंदिर एवं संस्कृत विद्यालय का निर्माण करवाया।

भोजताल का निर्माण - राजा भोज ने भोपाल के दक्षिण पूर्व में स्थित जलाशय का निर्माण करवाया जिसे आज बड़ा तालाब के नाम से जाना जाता है। यह राज्य का एक प्रमुख स्थल बन गया।

सोमनाथ मंदिर - गुजरात के शासक भीम प्रथम के साथ मिलकर उसने सोमनाथ मंदिर का पुनः जीर्णोद्धार करवाया।

भोजपुर शिव मंदिर - भोजपुर में उसने शिव मंदिर का निर्माण करवाया। यहां प्रतिवर्ष शिवरात्रि पर मेला आयोजित होता है।

Q] म.प्र के मध्य युगीन इतिहास में परमार वंश का प्रतापी शासक सिंधुराज का पुत्र राजा भोज गद्य एवं शास्त्र में पारंगत था। उसके शासन काल में धार नगरी में साहित्य, कला, और संस्कृति की अग्नि लगती थी। उसके द्वारा किये गये कार्यों को निम्नलिखित रूप में वर्णित किया जा सकता है:-

साम्राज्य : राजा भोज का साम्राज्य विस्तार मालवा, भिलसा, बांसवाड़ा, चित्तौड़, उदयपुर, गोदावरी घाटी तथा कोंकण का कुछ भाग शामिल था।
उसने प्राचीन राजधानी उज्जैनी से धार नगरी स्थापित किया।

विजय-पराजय : पारिजात मंजरी, उदयपुर प्रशस्ति तथा कालवा आदि लेखों के अनुसार राजा भोज ने त्रिपुरी के कलचुरी, गांगेयदेव, शाकम्भरी के चौहान नरेश वीर्यराम को पराजित किया। किंतु बुन्देलखण्ड के चंदेल, ग्वालियर के कच्छपघात तथा के कीर्तिराज गुर्जर के विरुद्ध युद्ध में असफल रहे।

रचनात्मक कार्य - रचनात्मक कार्यों के अन्तर्गत, कला, साहित्य, स्थापत्य, वास्तुकला एवं निर्माण कार्य शामिल है।

साहित्य - वह संस्कृत का विद्वान था। उसके राज्य के कवियों को संरक्षण प्राप्त था।

प्रान्तीय प्रशासन कुमार - उसे आर्यपुत्र भी कहा जाता था। प्रांतों का शासन उन्हीं पद अधिकारियों द्वारा होता था। प्रांतों को 'चक्र' कहा गया है, जो कई जनपदों में विभक्त था।

मौर्य प्रशासन के स्थानीय स्तर : 1. केन्द्र - सम्राट

2. प्रांत प्रमुख अधिकारी - कुमार / आर्यपुत्र

3. मंडल - प्रमुख अधिकारी - प्रदेष्टा / प्रादेशिक

4. आहार या विषय - जिला प्रमुख अधिकारी - विषयपति या विषयक

5. स्थानीय - 800 गांवों का समूह

6. द्रोणमुख - 400 गांवों का समूह

7. खार्वटिक - 200 गांवों का समूह

8. संग्रहण - 10 गांवों का समूह

9. ग्राम - प्रशासन की सबसे छोटी इकाई - प्रमुख अधिकारी - ग्रामणी।

ग्राम स्तर -

गांव नगर पदाधिकारियों गांवों में रहते थे, सरकारों का कर्मचारी तथा राजस्व अधिकारियों का भी था। जातकों एवं अन्य स्रोतों से ग्राम स्तर ग्राम शासन व्यवस्था की जानकारी मिलती है।

इस प्रकार चन्द्रगुप्त मौर्य ने लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना की, विशाल साम्राज्य में एक प्रशासन का संचालन किया।

प्रशासन का सप्तांग सिद्धांत — कौटिल्य रचित 'अर्थशास्त्र' में राज्य के सात अंगों की चर्चा की गयी है। जो इस प्रकार है - राजा (सिर) → अमात्य (आंख) → जनपद (जंघा) → दुर्ग (बांह) → कोष (मुख) → दण्ड / बल / सेना (मस्तिष्क) → मित्र (कान)

मौर्य प्रशासन के अनुसार राज्य को एक व्यक्ति माना गया। जिसमें राजा सर्वोच्च शक्ति के प्रतीक थे। जिससे इन अंगों को एक शरीर में कार्य करना आवश्यक इसी प्रकार समझा गया। प्रशासन के लिए ये आवश्यक थे।

तीर्थ - मौर्य काल में सर्वोच्च अधिकारियों को तीर्थ कहा जाता था। अर्थशास्त्र में कुल 18 तीर्थों की चर्चा है।

प्रान्तों का विभाजन - चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने विशाल साम्राज्य के कुशल शासन संचालन के लिए चार प्रांतों का निर्माण कर रखा था।

विशाल मौर्य साम्राज्य → चार प्रांत →
- उत्तरापथ
- दक्षिणापथ
- अवन्ति
- प्राची

उत्तरापथ की राजधानी तक्षशिला, दक्षिणापथ की राजधानी सुवर्णगिरि तथा अवन्ति की राजधानी उज्जयिनी एवं प्राची (मध्य देश) की राजधानी पाटलिपुत्र थी।

2.12 - चन्द्रगुप्त मौर्य मगध में नंद वंश के बाद भारत के प्रथम महान मौर्य साम्राज्य की स्थापना उसने पहली बार भारत में एक महान एवं केन्द्रीय नियंत्रण एवं कल्याणकारी राज्य की स्थापना की। उसका शासन काल 322 ई.पू. से 298 ई.पू. तक था।

चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपनी प्रशासनिक नीतियों के माध्यम से विशाल साम्राज्य की स्थापना करने तथा बाह्य आक्रमण से राज्य की सुरक्षा करने में सफल रहा।

चन्द्रगुप्त मौर्य की प्रशासनिक नीति में निम्नलिखित तत्व समाहित हैं।

प्रशासनिक नीति

- केन्द्रीकृत
- नगरीय प्रबन्ध
- प्रान्तीय व्यवस्था

केन्द्रीकृत शासन व्यवस्था - चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन का स्वरूप केन्द्रीकृत था जिसमें सर्वोच्च शक्ति राजा के हाथ निहित थी। किन्तु राजा कल्याणकारी राज्य की स्थापना करने में विश्वास रखता था। शासन में नागरिक और शासन की सभी क्रियाओं का समावेश था, जो कि कौटिल्य के ग्रन्थ में

सरकार में नागरिक एवं उपयुक्ति का समर्थन प्रभावित -
नियुक्तियों में जनता एवं राजकीय मार्ग (पार्टियां) में असंतोष
को नियुक्त एवं पदच्युत के निर्णय को प्रभावित करता था।

• युद्ध नीति गलती - गौरव वाली युद्ध एवं भारत ओर तक जनता जार को परेशान करने में लगी था।
• ज़ार अधिकारियों पर आलापार - जार ने बुद्धिजीवी व्यक्तियों के प्रति आलापक एवं व्यापक रवैया रखा था।

तात्कालिक कारण - देश में व्याप्त आर्थिक एवं सामाजिक हालातों से जनता असंतोष के लिए प्रथम विश्व युद्ध ने शामिल किया।
• आर्थिक संकट और अकाल - खाद्यान्न संकट की वजह से रूस की जनता, सेना, मजदूर हताश थे।
• उद्योग की मांग करना - समाज को भूख कर दिया गया।
• सेना का आंदोलनकारियों पर गोली चलाने से इंकार
• 11 मार्च 1917 को क्रांतिकारियों द्वारा जार शाही का घेराव किया जार के हस्ताक्षरों पर कब्जा।

अन्य कारण - मार्क्स की समाजवादी विचारधारा एवं बोल्शेविक दल के नेतृत्व में लेनिन ने रूसी क्रांति को सफल बनाया।
इन विवरणों से स्पष्ट होता है कि रूस की क्रांति के अनेक कारण विद्यमान थे। जिन्होंने संपूर्ण विश्व को समाजवादी आर्थिक प्रणाली के सिद्धांत पर बल दिया।

सामाजिक तथा आर्थिक कारण

1. किसानों की दयनीय दशा :- रूस एक कृषि प्रधान देश था किंतु किसानों की दशा अत्यंत दयनीय थी। यद्यपि 1861 ई० में जार अलेक्जेंडर II ने कृषि दासों की मुक्ति की घोषणा की, किंतु उनकी स्थिति में सुधार न हो सका। कृषि भूमि का असमान वितरण था। जमींदार वर्ग के पास देश की आधी भूमि थी।

2. मजदूरों में असंतोष :- रूस में कई औद्योगिक कारखाने संचालित थे। उद्योगपतियों ने मजदूरों का अतिशय शोषण किया। काम के अत्यधिक घंटों के बदले न्यूनतम मजदूरी। तथा किसी प्रकार की सामाजिक एवं आर्थिक सुरक्षा का अभाव था।

3. सरकारी नीतियों का दोषपूर्ण होना - आर्थिक सरकारी नीतियों में उद्योगपतियों एवं पूंजीपतियों के हितों की सुरक्षा की जाती थी। किसानों मजदूरों को अधिक कर देना पड़ता था। असंतोष का यह भी कारण था।

राजनीतिक कारण

1. जारशाही की निरंकुशता - रूस के सम्राट जार निरंकुश थे, जो सत्ता के दैवीय सिद्धांत के समर्थक थे। पीटर महान कहता था कि "जार पूर्ण दुनिया में किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं है"। इसी में इनकी रक्षा पादरी वर्ग करता था। अलेक्जेंडर III ने "एक जार, एक रूस, एक चर्च" का नारा दिया। जार निकोलस II भी पूर्ण तथा निरंकुश था।

पश्चिमी समूह – रूस, यूगोस्लाविया, रोमानिया, हंगरी, चेकोस्लोवाकिया, पोलैंड, इत्यादि [illegible]

दक्षिणी समूह – इटली, ग्रीस, स्पेन, पुर्तगाल आदि।

राजस्थान में प्रति वर्ष 21 जनवरी से 26 जनवरी तक [illegible] महोत्सव का आयोजन होता है। वर्तमान 47 वां संस्करण 2021

Q. 3

3 A] रूस की क्रांति अपने समय की एकमात्र क्रांति थी जिसमें तात्कालिक क्रांतियों के विपरीत सामाजिक आर्थिक समानता पर केंद्रित थी। इस क्रांति ने जाना कि इस विचारधारा एवं विश्वास का खंडन किया कि सब मनुष्य एक समान नहीं है, और राजा का निरंकुश शासन की शक्ति दैवीय आधारित है।

रूसी क्रांति के अनेक कारणों एवं परिणामों को निम्न लिखित हैं:-

कारण : इसमें क्रांति के पूर्व ऐतिहासिक एवं तात्कालिक सामाजिक - आर्थिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि को समझा जा सकता है।

कारण

आधारभूत

1. सामाजिक
2. आर्थिक
3. राजनीतिक
4. सांस्कृतिक एवं बौद्धिक

तात्कालिक –

- प्रथम विश्व युद्ध में रूस का प्रवेश
- आर्थिक संकट

21] भारत में 1976 से पूर्व शिक्षा, जो अब तक राज्यों पर था, किन्तु 42 वें संविधान संशोधन 1976 द्वारा समवर्ती सूची में रखा गया।

निम्नलिखित काल में आजाद भारत तक निम्न शिक्षा आयोग

1. मैकाले का विवरण पत्र - 1835 शिक्षा को अंग्रेजी भाषा पर जोर दिया।
2. वुड्स डिस्पैच - 1854 - भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा
3. भारतीय शिक्षा आयोग - 1882 - हंटर - प्राथमिक शिक्षा में विकेन्द्रीकरण आवश्यक।
4. विश्वविद्यालय आयोग - 1902 ई. लार्ड कर्जन
5. सैडलर आयोग 1917 - माध्यमिक शिक्षा को निदेशक विभाग के हाथ में सौंपना।
6. सार्जेंट आयोग 1929 -

इसके अतिरिक्त भारतीय आयोग (1944) तथा कोठारी आयोग 1968 तथा नई शिक्षा नीति 2020 का रहा है।

22] चंदेल शासकों द्वारा 950-1050 ई. में निर्मित खजुराहो के विश्व प्रसिद्ध मन्दिर अपनी वास्तुकला एवं स्थापत्य के लिए विश्व विख्यात हैं। यह हिन्दू, जैन धर्म का अद्भुत संगम स्थल है। यहाँ के मन्दिर समूहों को तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है -

1 पूर्वी मन्दिर समूह :- पार्श्वनाथ, आदिनाथ, शान्तिनाथ के मंदिर हैं।

इस प्रकार ग्रामीण प्रशासन को संचालन के लिए प्रत्येक गाँव को एक स्वतंत्र इकाई के रूप में संगठित किया गया।

इसके बाद राज्य द्वारा 12 अधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी उन्हें कर मुक्त भूमि देकर ग्रामीण व्यवस्था को शासन प्रणाली से स्थापित की गई।

ii] भारतीय इतिहास में दो सम्राट, एक सम्राट अशोक और दूसरे सम्राट अकबर ने धर्म को नये ढंग से परिभाषित किया, और कुशल प्रशासन हेतु चतुर धार्मिक व्यवस्था लागू किया।

अकबर की धार्मिक नीति निम्न थी :-

- दीन ए इलाही नामक नवीन धर्म की आस्था
- स्वतंत्र चिंतन एवं एकेश्वरवाद की भावना
- जजिया कर को समाप्त कर हिन्दू मुस्लिम एकता को स्थापित करने में सफल।
- सुलह-ए-कुल की नीति का अनुसरण
- पृथ्वी तथा सूर्य की उपासना करना
- धार्मिक त्यौहार का आयोजन करना
- उदार धार्मिक नीति के अकबर ने 1562 ई में दास प्रथा, 1563 ई. में तीर्थ यात्रा कर तथा 1564 में जजिया कर समाप्त किया।

इस प्रकार अकबर ने शासन व्यवस्था में धार्मिक उदार रूप अपनाया।

बाज़ारों के मूल्यों पर नियंत्रण - आपातकाल स्थिति में भी अनाज को बाज़ार की माँग आपूर्ति के अनुसार वस्तुओं के मूल्य स्थिर रखा गया। जिससे व्यापार [illegible] भी स्थिति सुनिश्चित हो सके।

बाज़ार नियंत्रण व्यवस्था में व्यापारियों को धोखा करने के लिए ए सिस्टम में पंजी रखना आवश्यक था।

शहना - ए - मंडी बाज़ार का दरोगा होता था।

अलाउद्दीन खिलजी को [illegible] नियंत्रण प्रणाली जनक माना जाता है।

अनाज के भंडारण के लिए बड़े - बड़े गोदाम बनवाये।

राज्य ने बाज़ार व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए क्रय [illegible] एवं आपूर्ति [illegible] की नियुक्ति कर बाज़ार में नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास किया।

5

2.] [illegible] [illegible] को [illegible] स्थापित [illegible] के [illegible] जाना जाता है। [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] था। [illegible] 12 [illegible] [illegible] [illegible] नियुक्ति [illegible] द्वारा किया जाता था, [illegible] [illegible] भूमि दी जाती थी, [illegible] उत्पादन कर [illegible] था। [illegible] [illegible] [illegible] होता था। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

3

2(क)। कलिंग विजय पश्चात अशोक ने 'युद्ध नीति' का परित्याग एवं 'धम्म नीति' का अनुपालन किया। उसके धम्म नीति को 'बहुजन हिताय एवं बहुजन सुखाय' की नीति पर आधारित थी।

धम्म नीति नैतिकता एवं मानवता के उच्च आदर्शों पर केन्द्रित थी। अशोक के धम्म के प्रमुख लक्षण -

1. पाप हीनता (द्वितीय स्तम्भ लेख)
2. बहु कल्याण (द्वितीय स्तम्भ लेख)
3. आत्म निरीक्षण (तृतीय स्तम्भ लेख)
4. अहिंसा, सत्य भाषण (चतुर्थ स्तम्भ लेख)
5. धर्मानुशासन, धर्म मंगल, कल्याण, दान, शौच (तृतीय [illegible])

बुद्ध के धम्म को प्रचार प्रसार के लिए उसने धर्म-महामात्यों की स्थापना की। तथा विभिन्न शिलालेखों, स्तम्भों के द्वारा धम्म का प्रचार किया।

(4) (3)

2(ख)] अलाउद्दीन खिलजी ने आर्थिक सुधार के लिये बाजार नियंत्रण प्रणाली लागू किया। जिसके अनुसार वस्तुओं के कीमत का निर्धारण, उत्पाद, विक्रय, भण्डारण एवं उपयोग पर प्रभावशाली नियंत्रण था।

बाजार नियंत्रण प्रणाली

- वस्तुओं के मूल्यों पर नियंत्रण
- नियंत्रण की स्थापना
- बाजार का मध्यस्थ व्यवस्था

दीवाने रियासत · शहना-ए-मंडी · कारवानी

(3)

नवीन व्यापारी उद्योग तथा शिल्पियों जैसे, इन सभी

आर्थिक स्थिति - इनके कुछ भाग के व्यापारिक थे पर स्थित होने से व्यापारिक प्रसार करना था व्यापारिक विकास रुका था।

मुद्रा नीति व्यवस्था - उपनिवेशों को स्थापित करने के लिए - कुशल सुनियोजित व्यवस्था।

उपनिवेश : अन्य यानी की उपनिवेश व्यापारिक उत्पादों की स्थापना के लिए पर्याप्त था।

इसके अतिरिक्त नागरिक का उच्च शिक्षा स्तर, नवीन अन्वेषण उपकरणों पर नागरिक का ध्यान होना आदि अनेक कारण आविष्कारों में सफल औद्योगिक क्रांति के लिए उत्तरदायी है। 3

2c) फ्रांसीसी क्रांति (1789 - 1793) में आर्थिक कारकों की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

कर व्यवस्था - राज्य के समस्त कर राजस्व का भार सहा तृतीय स्टेट, अर्थात साधारण जनता वर्ग पर था।

कर से मुक्त - पादरियों तथा कुलीनों को कर से छूट प्राप्त थी।

भूमि स्वामित्व - पादरियों एवं कुलीनों के पास कुल भूमि का 96% आता था। जबकि साधारण वर्ग के पास केवल 4% की ही भूमि थी।

सम्पत्ति एवं पूंजी - कुछ मालिकों ने अपनी भूमियों पर आराम से मजदूर लोगों की स्वतन्त्रता, जबकि साधारण वर्ग नौकर था।

इन कारणों के अतिरिक्त महंगाई, अकाल तथा किसानों सामन्ती ने फ्रांसीसी क्रांति को जन्म दिया।

[illegible] (...) ने भारत [illegible] आधार पर [illegible] [illegible] स्थापित किया।

[illegible] ने प्रशासन और [illegible] स्थापित किया। [illegible] (...) [illegible] स्थायी [illegible] व्यवस्था की [illegible] के आधार पर [illegible] की व्यवस्था थी।

[illegible] आधार व्यापार में [illegible] नहीं। अनुसंधान [illegible] हुआ।

4

[illegible] 1765 से 1850 ई. के मध्य [illegible] में [illegible] हुई। इसके कारण निम्न हैं-

[illegible] व्यवस्था - [illegible] का [illegible] और [illegible] रहा। [illegible] दिया।

[illegible] : [illegible] का [illegible] एवं [illegible] हुआ।

[illegible] ने [illegible] की

Scanned with CamScanner

(i) पंचतंत्र प्राचीनतम [illegible] शिक्षाप्रद कथाओं का संग्रह [illegible] विष्णु शर्मा ने की। यह संस्कृत भाषा एवं [illegible] लिपि में लिखा गया। [illegible]

(m) 'शक्ति का पृथक्करण' का सिद्धांत, फ्रांसीसी दार्शनिक मान्टेस्क्यू ने अपनी पुस्तक 'द स्पिरिट ऑफ लॉज' में दिया। अर्थ - कार्यपालिका, विधायिका, न्यायपालिका के मध्य शक्तियों का विभाजन।

(n) माइकल एंजेलो पुनर्जागरण कालीन इटली का प्रसिद्ध चित्रकार, प्रसिद्ध चित्र - पियेटा। सिस्टिन चैपल की छत पर चित्रकारी। निर्णय - [illegible]

(o) चार्ल्स डार्विन प्रसिद्ध जीव वैज्ञानिक, कृत पुस्तक की रचना तथा जीव और प्रजाति की (उत्पत्ति) की आवश्यकता की

Q. 2

2 A] इतिहास में चौदहवीं से सत्रहवीं शताब्दी तक के काल को पुनर्जागरण का काल माना गया है। यह एक ऐसा काल परिवर्तन था जो मध्यकाल के अंधकार-युग से निकलकर आधुनिक युग के आगमन को प्रवेश करती है। जिसका प्रभाव यूरोप के कला, साहित्य, विज्ञान, राजनीति आदि में था।

प्रभाव - साहित्य - दांते (डिवाइन कॉमेडी)

श्री गणेशाय नमः

[F]. कांग्रेस का नागपुर अधिवेशन, सन् 1920 में हुआ। इसमें गांधी जी के असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव स्वीकार किया।

[G] 1831 ई. में छोटा नागपुर के 'बुद्धो' भगत के नेतृत्व में अंग्रेजों के विरुद्ध कोल विद्रोह हुआ। कारण - कोलों की भूमियां सिक्खों (मुस्लिमों) को दे दी गई थी।

बुद्धो भगत

[H]. सूरत अधिवेशन '1907' में हुआ। अध्यक्ष - रासबिहारी घोष। कांग्रेस का नरम व गरम दल में [illegible] [illegible]।

[I] तात्या टोपे (रामचन्द्र पाण्डुरंग) नाना साहब के सहायक, 1857 की क्रांति में झांसी की रानी का साथ दिया। समाधि 18 अप्रैल 1859 शिवपुरी में।

[J] रानी दुर्गावती गढ़ मंडला की शासिका, गोंड शासक दलपत शाह की पत्नी, वीर नारायण की संरक्षिका थी। आसफ खाँ (मुगल सेनापति) से नरई नाला, जबलपुर के पास युद्ध में वीरगति प्राप्त।

[K] नागदा मध्यप्रदेश के उज्जैन जिले से 30 कि.मी. उत्तर पश्चिम में चंबल नदी के तट पर स्थित पुरातात्विक स्थल है। यहां से 'काले पुते मृद्भांड' के साक्ष्य, जोर्वे, मालवा, उ. नर्मदा, [illegible] आदि।

हरितवंत

पेपर - 1

20.02.2021

Q.1

1A 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण करने वाला गुप्त वंश का अंतिम प्रतापी शासक था। शासनकाल 380 - 412 ई. तक। आगमन - फाह्यान (चीनी यात्री)

1B] 'लोथल' सिंधु घाटी सभ्यता का गुजरात में स्थित एवं 'बंदरगाह' था, जो भोगावा नदी के तट पर स्थित था। अग्नि - धान की भूसी, चावल व बाजरे का साक्ष्य, तौल प्रमाण पात्र आदि। खोजकर्ता - डॉ. एस. आर. राव (1955)

1C]. उपनिषद का अर्थ - गुरु के समीप बैठना। वेदों की रचना का अंतिम भाग। उपनिषदों की संख्या - 108। भारत का राष्ट्रीय - सत्यमेव जयते मुण्डकोपनिषद से लिया गया।

1D] खिज्र खां, मुल्तान के गवर्नर मलिक सुलेमान का पुत्र था। सैय्यद वंश की स्थापना। 'तारीख-ए-मुबारकशाही' में उसे 'सैय्यद' बताया गया। तैमूर लंग का प्रतिनिधि था।

1E] नूरजहाँ (गयास बेग की पुत्री) असली नाम 'मेहरुन्निसा' था। 1611 ई. में जहाँगीर से विवाह। निर्माण - एत्माउद्दौला का मकबरा।

~~कॉपी को क्रमानुसार~~ सेट न पाना

प्रश्न क्रमांक लिखा ?

लेखन शैली में सुधार करें

Scanned with CamScanner